गौरव गाथा

प्रज्ञा प्रकाशन
कुम्भानगर बाजार,
चित्तौड़गढ़ (राज०)



निस्पृही निर्भय

निस्पृही निर्भय

प्रकाशक
प्रज्ञा प्रकाशन
बी 52, बाजार कुम्भानगर
चित्तौडगढ़-312001 (राजस्थान)
प्रथम संस्करण 1989
मूल्य चालीस रुपये मात्र
आवरण
अमित भारती
मुद्रक
शीतल प्रिन्टर्स
फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-302003

GOURAV GAN
(A Rajasthani Poetry)
By CHIMAN LAL JAIN
Price 40 00
Published by
PRAGYA PRAKASHAN
B 52 Bazar Kumbha Nagar,
Chittorgarh-312001 (Raj)

या गौरव गाण राजस्थानी आठ खण्ड कथा काव्य री पेलो करति देवलोकस्थ मातेश्वरी श्री कचन देवी पोरवाल रा श्री चरणा मे सश्रद्धा अरपण करू ।

जणा आपणी सेवा, सत्यता, सरलता नै साध्विता तो म्हारा हरदा मे कवि रे जोग कोमलता रा ई करुण अकुर उगाया वणा रो और कस्तर अभ्यथन करू ।।

जतरो निरमल थारा निरमल नैणा मे मा
वतरो निरमल नेह और कठै ।

नै जतरो पावन थारा पावन सपना मे मा
वतरो पावन प्यार कठै ।

निस्पृही निभय

परखैता री केवरण

सन् अस्सी रा आखिर सू म्हारा मन मे काव्य साधना मे लागवा री परेरणा जागी। हरदा मे घणी भावना उमडती ही। पण वणा ने उजागर करवा रो कोई जोग माध्यम म्हारे पा उपलब्ध नी हो। अणी हालत मे म्हारा मन मे यो भाव आयो के आपणी भावना अणी डिंगल रा माध्यम तीज आछी उजागर वई सके।

लिखणो शरू कीदो जद पेला तो हुणी थकी मन भाई आच्छी कविता जी भूलवा मे आई गी ही पण वणा रा भाव याद हा वणा भावा रा आधार सू वणा ने एक नयो शब्द विन्यास देवा री चेष्ठा कीदी।

आधुनिक राजस्थानी री साहित्यिक मेवाडी-मालवी लहजो हिन्दी रा सब्दा तीज आपणो रूप गरहण करे। जा म्हारी मातर भाषा पण है। आपना स्वाभाविक रूप मे राखवा रीज म्हारी चेष्टा री है।

क्रिया सरवनाम आद शब्द रूपा मे थोडीक रूप भिन्नता आवे है। ने मारवाडी, वागडी हाडोती, दूढाणी, शेखावाटी आद दूजी शैलिया सु पण विण रो मेल है। सिरफ हिन्दी जाणवा वारा रे वास्ते पण या भाषा समझणो घणो कठिन तो शायद नी है। याइज म्हारी माणता है।

यद अणी परयास ती राजस्थानी भाषा रा विकास मे म्हू म्हारी कोशिश ती कई थोडो घणो भी योगदान करी सक्यो तो म्हू चेष्ठा ने सफल समझू गा। अणीज विचार ती परेरित वई ने म्हे आपणा लेखण ने यो सब रूप दीदो है। ने अणा हगरी रचणाआरो एक ऐतिहासिक आधार है।

घणा सद ग्रन्था रा अध्ययन ती पण एक भाव धारा पैदा व्ही। चिन्तन ने जीवण रा अनुभव निष्करष हीज म्हारा लेखण मे सामिल है।

खास तौर जी हिन्दी मेइज लिखवा मे म्हारो भावरो रचो है। पण हिन्दी मे तो घणा वडा-वडा लिखवा वारा गघ्य ने पघ्य दोई विधा

म क्या। अणी वास्ते आपणी अणी मातर भाषा मे लिखणो इज म्हे ठीक समझ्यो। ने यो पेलो प्रकाशन राजस्थानी मेइज करावा रो साहस म्हें जुटायो है। मात्रा मुगत छन्द मे तुक मिला लिखवा मे इज म्हारी परवरति री है।

पच्चीस हजार अभिव्यक्तिया हिन्दी मे ने एक हजार करीब मेवाड़ी-मालवी मे लिखवा रे बाद या पेली लघु पोथी सुविज्ञ पाठका रे हाथा मे पहुचा म्हू एक प्रोत्साहन रीज अपेक्षा राखू हू। यद समुचित प्रोत्साहन मिल सक्यो तो आगलो प्रकासन हिन्दी मे लिखी कविता रो पण करावा रो समबल म्हने प्राप्त वेगा।

म्हे सत्य निष्ठा तोज लिखवा रो अभ्यास राख्यो है। सत्य निष्ठा ती लिखवा सु मन री ग्रथिया सुलझे ने मन मुगति ज्ञान रा मग पे बढ तो जावे। अणीज विश्वास सु म्हू लिखू हू।

लिखवा मे निस्पृही निर्भय यो म्हारी लेखणी रो नाम है।

म्हू राजस्थानी डिंगल मे एक नई विधा विकसित करणो चाऊ हू। अणी धरती ती जूडियो व्हेवा रे कारण अणीज रा हपूता पे म्हारी कलम ज्यादा चाली है। पण म्हू भारत मा रा सगला सपूत आतम बलिदानी शहीद शूरा ने पूरो समरपित र्यो हू।

थोडाक समालोचका रो म्हारा लेखण पे यो विचार है के म्हू गध्य रूप मे पध्य लिखवा रो ज्यादा आदि हू। पण या नई विधा गध्य काव्य रो नाम पाइजा तो म्हने कई एतराज नी है। म्हारे वास्ते या शैली हीज सहज ने सरल है। म्हू ज्यादा क्लिष्ठता मे नहीं पडनो चाऊ। दो पक्तिया मे तुक, ताल मेल बैठावो रो तो म्हे पूरो ख्याल राख्यो है। ज्यादातर रचणा हिन्दी मे लिखने अणी शली मे रूपान्तरित कीदी है।

आगलो प्रकाशन म्हारो हिन्दी भाषा मे करावा रो विचार है। यद माग री तो वीण रो असो राजस्थानी डिंगल रूपान्तरपण परकाशित व्हेई सके। साहित्य कणी भी भाषा रो हगार व्हेवे है। पण प्रोत्साहन विने मिलणो पण चावे।

बस अतरीज वात रे साथै।

आपरो ईज

चिमनलाल जैन

या तो धरती धन धन धीरा री

या तो वसुन्धरा बीरा री
या तो धराहीज रण धीरा री
या भारत मा रा हपूत हूरा री,
नै या आत्म बलिदानी वीरा री
या तो जौहर री आगरा खीरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

रणथम्बोर चितौड खिलजी चढ आयो
तद ओज शूरवीरा रो भडक आयो
हौसलो ठिकाणै विण रो लगवायो
कर जौहर पदमा आद दिखलायो
वी वीरागणा नारिया शूरवीरा री
या तो धरती धन–धन धीरा री

नाची ही या मागा मे मीरा
मगन ही कृष्ण भगति मे धीरा
मन री चम चम ही वा हीरा
या तो भगति मति मीरा री
या वसुन्धा भोरा भगता हूरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

या तो धरती धन धन धीरा री।

पन्ना आपणो लाल कटायो
करुणा रो पण लाल बचायो
मेवाड भौम अभिमान बचायो
अरे या तो कुरबाणी शूराणी
या तो वसुधा वीरागण वीरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

राणा रण मे खाण्डा खटकवाया
शूरवीरा हा भाला भलकाया
मगरा सू तीर भाटा चलवाया
अरे या तो तीखा तीखा तीरा री
या तो वसुधा है रण धीरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

भामाशाह रा भाव जग आया
राणा री वी सहाय उतर आया
चरण बढा वी पाछ नो खाया
या तो मेहत दानी करम सूरा री
या तो वसुन्धरा धन वीरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

आगरा राठौर अमरसिंघ धुजाया
दुर्ग आलमगिर पे भाला भलकवाया
झू झारा खालडा खुद रा खिचवाया,
अरे या तो मन राईज अमीरा री
या तो वसु धरा घणा शूरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

चारण भाट वरदावलिया वाची
सरवस्व निछावरो भावना राची
बात या कविजन कँवैजी साची
अरे या तो है कलाविद धोरा री
या तो धरा होज धन्यधन वीरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

ढाक पलास नै ई तो वाडा थोरा री
अरावली पार धार रा धोरा-धोरा री
कटोली झाडिया रा मीठा बोरा री
नै नरत हौरी गणगोर गवरी गौरा री
न या हपूत रण बाकुरा वीरा री
या ता धरती धन धन धीरा री

मैमाना रै खातर तो या पलक पावडा बिछावै
गुणिया रै स्वागत या मन ही मन मे हरखायै
दरसनारथी, सरणारथी या कदी नी भटकावै
वैर भावा सू जी आव वणा इज नै या छटकावै
नदिया री ढारा ई काछा क्यारिया कीरा री
अरे या तो धरती धन धन धीरा री

मरुधर नाम हुणता ही डर जावै
पण शैखावाटी जैपुर आ अड जावै
मेवाड हाडौती तो हरदा हर जावै
अरे या तो मीठा मीठा मोरा री
न या हरो भरी ने गुल-मोरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

नीत हूरजडो वगत पे उग आवै
मन मे एक नवी उमग जग जावै
ऊ तो मन हारा रा ही हरखावै
देवी देवगण देवलोक सू देख देख
ललचावै या तो है हाचा हूरा री
या तो धरती धन धन धीरा री

पन्ना री पुत्र बलि

पूत कदी कपूत व्है सकै पण माता
कदी कुमाता नी व्हेवै
या बात आज उलटगी, पन्ना यू
भरत सुत चन्दन सू केवै

पूत तो म्हारो सपूत हीज रियो
मनै'ज कुमाता व्हेणो पड्यो
वचण री आण निभावा खातर हीज
विमाता म्हनै व्हेणो पड्यो

मेवाड मही रेवै सनाथ चाहे म्हारो
सुख अस्तित्व मिटै
धरती रो कण-कण केवैला क्यू मा सू
बेटा रो अस्तित्व मिटै

उदय री पराए हान में तो मेवाड
राजवंश रो विनास छिप्यो
बेटा थारा बलिदान में इतिहास
गौरव रो रहस्य छिप्यो

धाय पन्ना पुत्र बळि रो मरमावए
कोई कवि पए कदी नी करो पावैला
वएी री तो कलमा स्याही दवाता रो
दीवाळो हीज पिट जावैला

यो स्वामी रा कुळ सातर आपएा बेटा रो
बलिदान कोरो नी केवावैला
वगत जरूरत री वेदी पे यो स्वत्व
ममत्वरो बलिदान महत् केवावैला

सत्ता सुख स्यान रो पिपासु ऊ बनवीर
तो घणो बदनुमो जालिम हो
बेरोक-टोक राएो बएावा सारू यो
घोर पाप करम होज लाजिम हो

स्वतन्त्रता रा प्रचण्ड पुजारी परताप
पितर, यो तद बे-मालूम हो
पन्ना पुत्र बळि देई नै बचायो जदी'ज
व्है सक्यो यो मालूस हो

वनवीर तो करुर कातील सत्ता लौलुप
सदा ही केवावैलो
अणी रै पेलां पण वणी उदय भ्रात
विकरम रो प्राण हरण करवायो हो

विण जघन्यतो उदय ने पुत्र वळि दे
पन्ना हीज वचायो हो
इतिहास री या एकज मीसाल
असो कदी पैला पछे नी व्है पायो हो

जणी वगत पन्ना पुत्र चन्दन रो माथो
धड ती अलग करवायो हो
वणी'ज वगत वीण रो मानवता पे
घणो भारी रिण चढ आयो हो

कई कदी वा अणी रिण ती उरिण पण
व्है पावैला
अणी तरु ऊ किण मा रो ममत्व पुत्र रो
सर कलम करावैला

चितौड री पावन धरा पुण्य पन्ना
पौरुप रा गीत गावती जावैली
अणी वलिदानी गीत री गाथा अेक
पीढी दूजी नै सदा सुणावैली

हर वगत सत्ता लिप्सा रा वनवोर
हर जगा नजर ग्रावै है
पण पन्ना पौरष री कमी हीज
कवि ग्रक्सा मे नीर भर लावै है

हल्दी घाटी रणथली

धन्य धन्य व्है वा तो महा धन्य व्हेगी
हे या पावण व्हैई माटी
बलिदानी चतर चेटक सा घोडा री टापा
वेवसी मे इज ईं नै ही पाटी
मोणा, भोल, राजपूत, पठान वगैरा सगळा र
सगळा व्है ग्रेक जूट पड्या
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्हैगी ही हळदीघाटी

वरसात री पैली तेज वोछार पड चुकी ही
तरवतर व्हैगी ही मातर धरा री माटी
दिहाडो हो इक्कीस जून पन्द्रा सो छियोतर
परलयकर लडाई व्ही ही हळदीघाटी
कविया रा कौमल कलित कलेवर मा भा
छा गई वा रगत रजित व्हई माटी
परताप रा शौर्य त्याग पुण्य राष्ट्र भक्ति र साथ
व्है ग्राई यादगिरी हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्हैगी ही हळदीघाटी

वी सगळा रा मगळा मेवाड़ी जोधा हा
जो सगळा मिल पील पड़्या

सतरू रा माथा सीना पे बरस द ादन
तिक्षरण हीज हा तीर पड़्या

गोफरणा सु भाटा मी हा भयानक नै
वी हा भरपूर पड़्या

डर भागी मुगल फौज भूली नै सगलो होस
तज दी ही हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्हैगी ही हळदीघाटी

वायज भय ती भागी मुगल फौज सज
तैयार व्है दुबारा वा पाछी भ्राई

हण्डे अक्बर भेजी घणी सारी कुमुक
भ्रौर पण वा लई नै भ्राई

अबे पालो पडग्यो वणा वाक्ा
मेवाडी सूर सरदारा ती

रगत ती वा लाल तराई भरगी ने वा
सारी री सारी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्हैगी ही हळदीघाटी

चमचमाती तलवारा वी वेसुमार वार
चम चमा चम चमक रिया हा

माथा कट-कट ने गाजर मूळी री तरा
घरा पर गिरी रिया हा

ई तो जालम हमलावर दुस्मण है
अणा पे दया रो तो कई काम नी

लासा तीज पटग्यो पूरो मैदान
ने वा पूरी री पूरी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्हैगी ही हळदीघाटी

मातर भौम सस्कृति ने स्वतन्त्रता रक्षा
खातिर हीज यो बुगल वाजियो हो

परताप रा पवितर पौरुष रो तो उठीनै
यो सिंघनाद गु जियो हो

मुगल सेनापति उ खड्ड मानसिंघ
माथो तो आपणे आप खुजियो हो

यू व्यो हो यो दुरधर युद्ध ने वा ठावो
व्हैगी ही हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

अवे परताप आगे वढने चेटक झट मुगला रा
हाथी पे चढवायो
वचग्यो अकबर सुत सैख सलीम
चिस्ति पण मानसिंघ डर घबरायो
पडग्यो हो भालो होदा पे पण ऊ पण
चर मर करिने चरमरायो
विण रा इण विकट विकराल युद्ध ती तो
उण दिन सहम उठी ही हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज या
व्हैगी ही हळदीघाटी

पछे मुगल सैनिक झपट झट बढ
परताप ने घेर लियो
दुरभाग सू वणीज वगत चेटक रो
लगडो पाछलो पैर वियो
तद रकसक भाला मान राज चिह्न
चवर छतर आपणे माथे टेर लिया
निकार ले गयो चेटक वणा रे सुरकसत
जदीज छूट सकी ही हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

वठे इज मौजूद रुठियो भाई सक्तिसिंघ
जाता चेटक परताप ने पँचाण लिदा

वडा भरात रो सुहारद स्वाभिमान आदर्स
विण और बारीकी सू जाण लिदा

पाछो करता दो खुरासानी मुगल सैनिक
निपट लेणा मन ठाण लिदा

क्षगऊ चेटक मग आयो वरसाती नारो
कूद ग्यो यो देख री ही हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

यणीज नारा पे पौछ विण ठीठक्या ने ललकार
पेल्या तो दाया रा माथा काट लिदा

फेर पार कर गई लम्बी टेर दी रुको नीला
घोडा रा सवार रुको चित्त उच्चाट दीदा

रुक्या परताप रे सागे पहूच तन मन मस्तक
सब चरण मे हीज हा पाट दीदा

माफी दे दो तात यो भाया रो पाछो मिलण नजारो
मौन निरख री ही हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

घायल चेटक रो रुकता ही आपणा
प्राण पखेरू त्याग दीदा
राणा रे विण शहीद पसु साथी वणारी
आखा मे अविरल आसू छाग दीदा
दोया भाया मिल आखरी किरिया कलाप कीदा
पण वी मन वणा रा उच्चाट दीदा
चेटक समरति अठै'ज व्हुई निरमत
वटा सू दूर नी हो हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

वणा डेढ लाख पे ई वाईस हजार वीर लडाका
पार नी पाया
पण यो जन युद्ध तो व्यो भयानक जिण री कीरत
सब वेता आया
अवे वीर वी यो दगल छाड तो विखर गया
पणहारी नै हिम्मत नी धाया
परणवीर आसरी जीत थारी वा तो यू इज
गू ज री ही हळदीघाटी
गर गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

लगभग पाच हजार सूर लडाका कट मरिया
पच्चीस हजार हमलावारा ने काट दीदा
समरथली रा स्थान तो शूरमाँ सतरू सैनिक
सवा तीज हा सम्पाट दीदो
देख ने यो नजारो मुगल सेनापति मान तो
हाथा सू पीट नीज रा ललाट लीदो
वीरा रा मुलक पे हमलो देख लिदो फल्यो कस्यो
सवाल यो इज गू जा री ही हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

वगत हीज कदी कदी करणी रो बलवान व्है जावे
हूणो पाठक प्रियवर साथी
या हमलावर अकबर री फौज दादा बाबर सू
कई गुणो बडी नै ही घणी मदमाती
दगो दियो विण तुरक राजा सगराम नै
कानवा मे पण हारणो पडयो हियारा ती हाथी
वणीज युद्ध छल रो बदलो गिण गिण ने चूकगी
आज या लडाई हळदीघाटी
गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

पुरातन नेता स्वामी वसज भाई सगा पै
हाथ उठाता सरम आवे ही

गैरत छनिक अवे पण वाकी ही वाईज
गै रै नै याद पण आवे ही

नै सहन्साह अकबर नै पण अवे भरोसो
तो अणा रो र्‌यो हो कोनी

अणीज ख्याल ती पाच्छा बुला लीदा जग ती
जद हल्की वी ही हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

अबे वीर वो कर गुरिल्ला युद्ध री तय्यारी
वणीज मे वी भू भ पड्या

साह अकबरी फौज कठै वा मगरुरी स्यान
खावा पीवा रा तक लाला पड गया

नया नया सिपे सालार आया वणा खल खवीसारा
तो खेमा पण लूटी गया

वणा नै खूब छकाया मेवाडी सूर सरदारा
समरति अकमय वी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

पण लडता-लडतां परताप रा पण सगला रा सगला
खाली खजाना व्है गया

एक वगत असो पण आयो जद स्वजन प्राण
अन्न रा पण लाला पडी गया

तद धनी धीर दानवीर भामासा आपणा
पुरवजा री अरजित सगळो कोस हवाले करी गया

ससस्तर सैन्य दल वल फैर व्या गठित
चप्पा-चप्पा फैर व्है गी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज या
व्है गी ही हळदीघाटी

परलोक गमण सु पैला पायल चितोड छोड
सब गढा पै पाछो अधिकार जमायो

मुगल फौजो तो जठै जठै भी हा वणा नै तो खोज
खोद खदेड बुरो विस्मार करायो

महाण मुगल समराट रा मानस ने कर मजबूर
स्वतन्त्र सत्ता स्वीकारवाने तैयार कराया

दिग दिगान्त मे मेवाडी धीर वीरा री गाथा फैलगी
अणीज सु याद आवेली हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

या आकरामक सामराज साहु सु सवतन्त्रता
देश परेम मतवारा री लडाई ही

भूल्या आपणा अतीत गौरव ज्ञान वैभव स्वाभिमान
वणा सवारथा री पण या सगाई ही

महान राष्ट्र रा निजी महत्वाकांक्षा सुख सवारथ
भोगरत घटका री नी या वेहयाई ही

भोग पसुपण भय हीज दासपण घन घोर अन्धकार
जलती मसाल वणी हळदोघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज वा
व्है गी ही हळदीघाटी

नरत वूट अधम जी कै व्है राणा रणथळी
हलदीघाटी न हार गया

वदी या पण सोची वस्यो परवल सतर वतरा
परवल वेग सु प्रहार किया

मुगल समराट महाण रा मनसूवा लगातार
वतरा प्रगर सौय सु सहार किया

परयण वर्वि वरद तो योद्धज मानती आया
वीरत अमर वरदी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डना हीज या
व्है गी ही हळदीघाटी

आतम रक्षात्मक लडाया राष्ट्र घणी लडी पण
यांईज़ राष्ट्रीय भाव वैभव मीसाल वणी

पराधीन काल यांईज स्वाधीनता सग्राम री भावना
वढ चढ नै घणी विसाल वणी

हमलावर लुटेरा, ठग, हिन्सा सव्ज वगीया
वद सु वदतर नै वदहाल वणी

अखण्ड भारत भावी सग्राम निस्पृही निभय
प्रेरणादायक निसाण वणी हळदीघाटी

गरु गरव गरिमा गौरव मण्डता हीज़ वा
व्है गी ही हळदीघाटी

हिन्दवाणी मायड री गैरत रो लाड

नोलम रा बाजोटा नै सोना री पराता मे
पट् रस जीमण जी मनवार वना लेता कोनी
वी राज वस घर आज तरसे रुखा सूका
टुकडा तक या वातड पण म्हाँ करता कोनी
पण यो हियो फाट अब तो छिद छलनी व्है जावे
या वातड अबे मुखडा मे टीक नी पावै
कई आछो व्हे तो व्हेई दीन हीन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

सुणता ही पाथल री या वातड वणी
धीर वीर भामा रो तो वो हियो भर आयो
साथ साथ पीढी रो सचित सगलो कोष
समरपण करवायो आपणो भाव जतायो
पच्चीस हजार सैनिक वारा वरस
गुजारा रो परवन्ध तो अबे मारे ती आयो
म्ही तो घणा भटक्या राव नै सोघण नै
अबे अणी कु वगत तो लापरसी
मनवार म्हो कराता कोनी

कई आछो व्है तो व्हई दीन होन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

पण मेवाड रो दीवाणगी तो था अणोज
पीढी मे पाई ही अतरो धन साधन
थाँ कठा सू लाया

अलवर छोड नै जद म्हा आया हा म्हाणो
संचित धन वभव पण म्हाँ सगलो
हुण्डे लाया हा

ऊ कद कणी विपद मे काम आवैला
अरज यायज तो म्हा रावराती
करवा नै आया

योजणा वणो ससस्तर म य दल वल
फर व्या भैरा लापरलो वात तो
म्ही पण कराला कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दीन हीन दुखियारी
इण हि दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

अबै हताश मेवाडो वणा शूरवीरा रा
वी हिया पण फैर भर तडग पडी
बारूद सा भडक आया

जग लागो तलवारा रे तक पाछी करवाण लागी
जो केवो तो सगळो रो सगळो म्हा
करवा नै आया

नै म्ही सगळा रा सगळा म्हाणा सारा रा सारा
प्राण मन फेर पाछा अरपण
निछावर करवा नै आया
सगला मुगल ठिकाने तैहलको मचग्यो
जी पाथल री मार रो भय तक
अवे खाता कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दीन हीन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

परलोक गमण सू पैला पाथल चितौड छोड
सगला गढा पै फेर पाछो अधिकार जमायो
मुगल सैनिक भठै-भठै पण हा वणा नै तो
खौज खोद खदेड बुरो बिस्मार करायो
अणी जगती नै वणा मेवाडी सौय वीय री
लगातार पाछो आछो अवमाण करायो
दिग दिगान्त मे वणी पुण्य परताप री गाथा
फैलगी निस्पृही निभय लापरली
कविता तो करैला कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दीन हीन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

भामा [1] थारा धन दान धन्य धन्य हो गयो
मा हिन्दवाणी री लाज बच गई,
तगडा दुस्मण री वा गाज टल गई
कई व्है तो अणी हिन्दवाणी मायड नै
राजा वस री गैरत रो थेह घणो आछो
कीदो जो या आण बच गई

जुग जुगान्तर तक जन जन थने पूजेला
हिन्दवाणी रा जाया री तो आ
लुट चुकी हा वा स्यान बन्च गई

ता परलय यो राष्ट्र थारी दानवीरता
याद राखेला थारा चरणा मे झुक्यो
यो माथा ता पाछो उठैला कोनी

कई आछो व्है तो व्हैई दीन हीन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरा लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

या तो म्हा पण मायो कै हर मनख
धनी धीर दानवीर भामा साहनी व्है सके

पण कई ऊ आपणी मातर भोम समाज नै
मनख पणा री ओकात रै वास्ते तनिक
त्याग आत्म बलिदान पण नी ऊ करी सके

नै आपणी कौम री बहतरी नै गौरव रै वास्ते
कोई सौय पुरुसाथ पण नी ऊ धरी सके

परण वीर परताप नै दानवीर भामासाह
हरी री अपेक्षा तो दायित्वहीन धृष्ट
लौलुप नै अणाती जुडिया अणा
तस्करा सु तो म्ही कराला कोनी

कई आछो व्है तो व्हई दीन हीन दुखियारी
इण हिन्दवाणी मा गैरत म्ही पण
अतरो लाड लडाता कोनी
अतरो प्यार कराता कोनी

राजसिंघ चचला ब्याव

मुगल वगत ही दिल्ली सु चाल एक
विसातिम रूप नगर श्रा जावै है
साथे वणी रै घणी खरी तसवीरा पण वा
श्रा राज महला मे रुक जावै है

राठोर विक्रम सिंघ श्रठै राजा हा नायिका
चचला श्रणारीज राज कुमारी ही
जिण रा सुकोमल रुप लावण्य री चारु
दिसा मे चरचा भारी ही

बिसातिम राज महला मे तसवीरा
सारी दिखलावै है
पण मुगला री तसवीरा वा पैली पैल
हीज वतलावै है

सहेलिया सम्मेत चचला ई तसवीरा
देखती जावै है
पण मुगला री तसवीरा ती तो वा
खिन्न जरा व्है जावै है

नै ओरंगजेब री तसवीर रै तो वा
ठोकर पण एक लगावै है
वीर राजपूत कवरा री तसवीरा दिखावारो
आदेस वीनै दिवावै है

अणी पै वा जयसिंघ जसवन्तसिंघ
वगैरा री तसवीरा दिखलावै है
देख वणा नै वा आपणा मन री वात व्है
वेहिचक यू जतलावै

अणा नै तो म्हू मुगलाँ राईज आज्ञाकारी
सेवक जाणू हू
वा तो सिरफ एक सवतन्त्र राजपुरस तसवीर
लेवणी चावै है

पछै उदैपुर राजा राजसिंघ री तसवीरा रो
अनुदेस वीनै फरमावै
पण बिसातण तो वणा नै विणारा पिता रा
सतरु वैणा जतलावै

राणा कणी रा सतरु नी वी मानव मान
मरजादा रा रक्षक है
वणारीज वा तसवीर खरीदेली यो स्पष्ठ
तक्ष जतलावै है

नै पछै वा राणा री तसवीर खरीद
मन ही मन इठला जावै
बिसातिण री तो वठ घणी खरी और
वस्तुआ पण घणी विकजाव

कालान्तर में याईज दूती विसाविरा फैंर
दिल्ली लौट श्रा जावै है
चपल चचला रूप लावण्य री चरचा
श्रौरगजेब सु श्रौर चलावे है

वा कैवे राज कूला मे इरा म्हू तो जाऊ हू
नै श्राऊ हू
परा चचला सरीरो तो रूप लावण्य म्हू
श्रौर कठैई नी पाऊ हू

सुरा यो रूप लावण्य रो वखारा फैर,
श्रौरगजेब श्रौर ललचा जावै
नै विकरम सिंघ नै विने विरा री वेगम
वरणावा रो सन्देसो भिजवावै

सुरणी नै यो साही फरमान श्रवै राजकुमारी
चचला घबराई जावै
राजा राजसिघ नै झट श्राले जावा रो
वा सन्देसो भिजवाव

श्रौरगजेवी श्ररमान पूरो व्है जावो रो श्रापरणो
भय भी वा वतलावै है
झट श्रा लै जा व्याव रचावा री श्ररज
विनय सु वरणान कर व्हावै है

श्रौरगजेव परा वरात रूप एक बडो लस्कर लै
रूप नगर री श्रोर वढ जावै
जारा श्ररणी बात नै राणा राजसिघ श्रवरोघ
वरणो झट करवावै

सरदार चुण्डावत रै साथे एक घुड सवार दल
आगे भट बढ जावै है
औरगजेबी लस्कर रो रस्तो वो एक तग
दर्रा रा नुक्कड पै रोक थम जावै है

वणीज वगत राणा राजसिघजा चचला नै
रूपनगर सु उदैपुर ल आवै
बडी धूमधाम वठैईज विण मु व्याव पण
वो कुशल नेम सु रचवावै

नै वठै चुण्डावत औरगजेब नै विण तग
दर्रा रा नुक्कड पै उलभा देवै है
विण रा सब हौंसला पस्त वी वीर युद्ध
क्षेत्रमें प्राण निछावर करा देवै है

चचला राजसिघ व्याव चरचा सुण औरगजेब
और खफा व्है जावै
एक भारी फौज ले ऊ जालिम अबे उदैपुर पै
भी चढ आवै

पण अरावली रा मगरा मा ऊ राजसिघ सु
बुरी तरै पीट जावै है
खुद री बेगम बेटी वठैईज छोड ऊ
प्राण बचा भग जावै है

जणानै चचला सहेली वत वणा राज महला
मा रक्खा लेवै
नै सन्धि व्हैवा पै सन्मान सहित पाछी
औरगजेब नै पौंछा देवै

धन्य धन्य वी बलिदानी वीर राजपूत
जो एक अबला रा परित्राण किया
भारत री क्षत्रिय गरिमा रा वी और एक
नया हीज उत्थान किया।

नै निस्पृही निर्भय रा अन्तर ती ई
कथा काव्य बखाण किया
क्षत्रिया री गरिमा रा ई असर तो
सगळा री रग रग मे रमजावै है

राजसिंघ सहधर्मिणी बण चंचला
जीवन सफल कर जावै है
नै भारत रा गौरव री गरिमा बण वा
इतिहासा सु जुड जावै है

राजसिंघ चंचला

क्रिषरा री कुरबारगी

या केणी एक ग्रात्म बलिदानी वाला री
जिने कवि कलम समरपित व्हैगी
करुणा ती व्हैई तर वतर बिचार भाव भाषा
सगरी विनै ईज ग्ररपित व्हैगी

याद ग्राईगी वा राज कुमारी क्रिसणा
जा वधु वणता वणता विष प्याली पी लै सोइ गई
करीगी सवस्त्र निछावर स्व कलित कलेवर
नै वणी कुबगत नै पण वा रोतो रै छोड गई

ऊ तो ग्रात्म बलिदानी नी जिने सिकार
ग्रस्त्रा रो वणायो ग्यो व्है
व्हीने किणरो ग्राशीर्वाद पण नी करम फल
हीज जद चरवायो ग्यो व्है

जो खुद नी व्यो व्है बलिदान
वलिदा बकरो वणायो ग्यो व्है
कीदा व्है घणो कपटाचार ग्रातम बखाण
वणीज रो मजो चखायोग्यो व्है

अवे गुन्नीसवी सदी आरम्भ घटी
कुरवाणी कथा एक वदरद वयान
कविया रा पण ई सुकरत वजणानै वी
करता रै म्है सविवेक सज्ञान

मेवाड महीपति महाराणा भीमसिंघ
भखर वडाहीज सवाभिमानी हा
वणा री राजकुमारी क्रिसणा भाव पण
बढ चढ कडा हीज वी वलिदानी हा

नख-सिख तक सागोपाग सुन्दरी
वा जोबन ती जद मत मस्त भई
चहु दिस मे सोहरत फैलगी
पाणी गरहण हित लालायित हा राजवस कई

राणा रा डूब्या घणा सोच मे कुवरी नै
किण राजवस मे देऊ
उत्तम कुल मे या पुग जावै तो
सुख चैन री म्हू निंदिया लेऊ

सौन्दय लावण्य नै मधुरम माधुय तो
विण रा अग-अग ती चूता हा
अणा रो सौस्ठव सरज लै सगार तो
वी मन मुनिजण रा भी छूता हा

दन्त द्युति विण री उजवल हीरक
वणावली सरीखी दमकती ही
नै नयणा री ज्योति पण चारु चदर
किरणावली सरीखी चमकती ही

होठा री छवि गुलाबी गुल गुलाब
ताजा पाखडिया री याद देवाती ही
अरे वणो पै तो सुन्दरता स्वय हीज
व्है बलिहारी वारि जाती ही

केस रासि कमर सु नीचे वा सावण री
स्याम घटा सो गहराती ही
या यू कैदा के वा रूपरासि वणी मे
ललित ललाम छटा सी लहराती ही

कटि वणि री केहरी सी वा तो
मद भरी घन मस्तानी ही
स्व स्थल समय री चरम सुन्दरी
पण मन वा घणी मरदानी ही

गति गजणी सम दरग मरग सा कमनीय
कजराला वा कमलणी सी मन लुभाणी ही
भौवा कवाण सी दरस्ठि यद मिल जाय तो
वा तत्क्षण बाण विधाणी ही

यो रूप रग अरुण मुख अनुपम उरवसी
वा जोबन तो गरव गदरानी ही
रणबाका राठौरा सु सम्बन्ध जोधपुरेस्वर
या राजसरी अपणाणी ही

पण हन्त दुरदेववस वी राजपुरुस तो
अकस्मात हीज जद देहान्त वियो
तो जोधपुर सु उत्तराधिकारी भ्रात सग हीज
यो सम्बन्ध रखण सदेसो निस्णान्त वियो

वग्राढी जैंपुर राजवस जद इरण
दुरघटणा रो ज्ञान वियो
तो विरण री तरफ सु पण क्रिसणा
स्व कुल वरण ग्ररमान वियो

काल कवलित हो मुगल हकुमत ग्रवे
मुगत जैंपुरी घणा सवल मानी हा
भेज दियो टाक पीण्डारी ग्रमीर खा पण
इरादा हीज परवल ग्रभियानी हा

यैंग्राडी जोधपुरेस्वर ससौय कयो
क्रिसणा तो ग्रवै म्हाणीज कुलविभा है
ग्रणीज कुल या रैवेली या तो ग्रवै
ग्रणीज कुल रो सु सुहावणी सोभा है

पण जोधपुर सु सन्देसो पुगवा पैला
तिराक जैंपुर भेज दोदो राणा जो याईज भूल व
रग मे इज सब भग व्हैई ग्यो नै वात या
पकड जबरदस्त हीज एक तूल गई

ही जा वात ग्रणी तरेरी वा तो ग्रवै
वतगड वण नै रै ई गी
नी मानो ता दा मेवाड उजाड रवा री
धमकी तो वात ठणी नै रैईगी

मरैठा सरदार दौलतराव सिन्धिया ग्राई समझाया
जैंपुर मेवाडी गरिमा रै तो जोगनी
वी मुगला रा मनसवदार मेवाड री महाराणा
महिमा सम तो ग्राच्छो यो सुयोग नी

पण जपुर जोधपुर तो आपस में ईज
उलझ पड्या रण धमासाण मच्यो
रजपूती नर मुण्ड लुडक पड्या सुख चेन
हो नी कणी रो पण वन्च्यो

तद व्है राणा आकुल समस्या पै
स्वकुल मे सोच विचार कीदो
क्रिसणा भी ही वणी मे सामल वणी पण
सोच नै आपणो विचार दीदो

वणीज आपणी वलि रो परस्ताव कीदो
वा मरवा नै तैयार व्हैई
राजकुला मे कन्या तो जनमता ही मरै अवे
वा पण योईज करवाने तैयार व्हैई

घणा लाड प्यार जी पारी पौसी वतरा कस्ट
वात्सलय ती वडो कीदा
कई सिसोदियो रगत नी अणा रग मे
वस फकर कीदो तो यो ईज कडो कीदो

तद हत्या हित एक कुटम्बी जन नै ईज
यो आदेस दियो गयो
पण विण रा तो हाथ पग ही फूल्या
बरछै पण साथ नी हो दियो

अवे विने एक विस पण दियो गयो
जो व्है उलटी नै निकल गयो
विडम्वणा हीज एक वणी कुवगत मे
कद कुण कणी रो हो साथ दियो

फैर एक घोर विष प्यालो भरी गई
जिने पी क्रिसणा खोई
हलाहल होज हो ऊ तो जिने पी
वा राजकुमारी सोई

पी प्याली नै वा भोरी कु वरी तो असी
खोई के फैर वा नी रुठ सकी
आपणो कुल सकट सु उबार दीदो
नै फैर वा कदी नी उठ सकी

जद देख्यो राणी मा क्रिसणा रो सच
तो व्हैं करण क्रन्दनधार वही
राणा भीम रो वजर सीने पण करुणा ही
कट उर होज कटार सही

मा ममता क्रिसणा सरज अवे तो
अरथी होज रो सगार वणी
लख विलख ने मा रोई कई म्है
इने अणीज ही कार जणी

सतरु रो रगत व्हैवावा वारो राणो
अस्त्रा री धार व्हैवावतो जातो हो
नै ऊ वैना रो भाई पण विन बहना
वेबस बिलखावतो जातो हो

काप उठ्या हा धरा अम्बर पण
विण दन मरत्यु रा इण डेरा सु
जल थल नभ चर सगला रोया हा
निरदय मरत्यु रा इण फेरा सु

नै जद यो सुणियो उदैपुर नगरो तो
विण मे पण एक हाहाकार उठो
वजार गरी चौहटा सहरो सब जगा
विण दन करुणा व्हैई साकार उठो

अरे परवाण चढो ही क्रिसणा अबे तो
वा परजाई जावा वारी हो
अरमावा ती वा तो उडती ही विणरी तो
छवि होज अरुणाई स्यान वारो ही

क्रिसणा थारी या कुरवाणी तो राजपूतोज
एक आण केवा व्हे है
कुमारी कन्या गरिमा तो थने आज पण
सरधा रा सुमन चढा व्हे है

भारत रो ललनवा असा तो घणा खरा
आतम बलिदान कीदा
आपणा कुल गौरव री रक्षा खातर वणा
कई नी हा अनुदान दीदा

ना मालूम का कवि रो या लेखणी
इतिहासा मे व्है जावै है
नै आपणी नोक सु या असी
करुणा चित्कारा पण कै जावै है

क्रिसण कुरवाणी री तो याईज एक
करुणा करण है महानो
दारुण दरद भरी अतिव या तो है
निस्पृही निभय नै जुवानी

नटणी री हत्या

हर कलित कला मरम वेता मन कवि
एक करुणा री धार जगावणी चावै है
या मानवता अतीत सू घणी दुखियारी
वी अणीज रो प्यार जगावणो चावै है

अणी वसुन्धरा पै अगणत कलाधर
मानव मन धरा री प्यास बुझावता हा
आपणा अजब अनोखा अद्‌बुध कला
सौन्दर्य ती आपणी रोटी आप चलावता हा

नटणी चबूतरो या यादगार तो उदैपुर
पीछोला झील मे वणाईगी है
पण व्यो यो तो घोर अन्याय जघन्य अत्याचार
वणीज री सरम भोम मीटाईगी है

मेवाड रा इतिहास गौरव केण्या अनन्त
वणा री कई कमी नी है
पण नटणी हत्या री कलक केणी जाणकारा नै
कम वणी री गमी नी है

राणा स्वरूपसिंघजी अणीज पीछोला झील
जगनिवास रा वरन्दावन मेला मे रेवता हा
वणा रा घणा अनोखा ठाट पाट पूरवजा रा पुण्य फल
हीज वी ठाट यू चखता हा

अठेईज व्ही रगणा नटणी री हत्या ऊ तो
इतिहास हीज छिपायो जावे है
उपेक्षा हीज वही पणी री तो सिरफ गरव
गौरव रो ईज विछायो जावे है

कैलासपुरी वासी रगणा सरवाग सुन्दरी
विण री धन मस्त जवानी ही
पिता महेसर परसाद री या नयन तारा
मदभरी नै घन मस्तानी ही

नाच गान कला निपूण अणी फन मे तो
वा मेहतमानी ही
आपणा पिता रोज या सिस्पा चाल ढाल ती
लागती घणी सयानी ही

अणीज कला सौन्दय ती वा असुनीय धन
कस कमर कमावती ही
आछा आछा सेठ साहूकार राजा माराजा
वा घणा माट रिझावती ही

परदेसी सेठ साहूकारा री तो कैलासपुरी मे
घणी भीड जमी रेवती ही
रतन आभूसण मुदरा री वरखा
पण्डा पुजारिया री पण घणी रेवती ही

चमण नट पुत्रती व्यो विण रो रिस्तो
व्याव री वात पण पूरी पक्की ही
दोयारा हरदा जुड्या थका वरति
या नरत गाण कला हीज नक्को ही

यो तो म्हारी तरफ एक टक निरखे
म्हू काम जरा नी करी पाऊ हू
जद जद यो म्हारी तरफ देखे
म्हू तो ध्यान हीज चुकी जाऊ हू

वणीज दुख हरण सुत वासरी वादक चमण
तलवार ती वेई ग्यो विण रो सेहजो
जणी आपणी आखा छेद विण प्यार नै
पुरी तरा हीज हो सेहज्यो

विण रा इण क्ला सौदय रो चारा तरफ
हो घणो चरचो
हर धनिक हो लालायित फैर चावे व्हैई
जाम्रो कतरोई खरचो

रगणा रो नाच गाण देखण सारू उदैपुर
वरन्दावन महला सु पण बुलावो आयो
दल समेत नटराज महेसर परसाद पौंछया
दल करतब आपणो दिखायो

ढोलक री ढम ढम पै रगणा तरै तरै रा
नाच वताया हा
देख जणा नै हर दरसक रा मन मे
नया रग छितराया हा

सात फीट ऊंचा रस्सा पै चढ फेर वणी
आपणो नाच बतायो हो
देख विने तो राणो पण रिझ्यो झील पार
जा आणो देखण हित ललचायो हो

खुद स्वरूपसिंघ बहुमूल्य मोती कण्ठो
रगणा नै पहनायो हो
मेला सु झील पार जा लौट आणो
दिखावा सारु फुलसायो हो

यद यो कर बतावे तो उदैपुर आधो थू
पट्टा मे पा जावेली
कयो रगणा कानी कर बतावे जद वा
आधो उदैपुर पट्टा मे पावेली

आगला दन महला ती झील पार
म"दर तक रस्सी बन्धवाई जाव
जिण पे नाच रगणा द्वारा आपणी
करा विकट रूप दिखाई जावै

देख यो करतब ऊ राणा रो नीज मत्री
जगमन्तसिंघ घबरायो
आधो उदैपुर अपात्र रे हाथ चल्यो जावै
योईज सोच नै ऊ विचलायो

सोच विचार नै इण विकट नजारा सु
ऊ आपणेज आप डूब रियो हो
राणा री इण फरियाद दिली सु ऊ दिल
आपणा मसौस सूब रियो हो

पछै आधो उदैपुर विण अधिकारी नै
अभिवादन पण नी करावेला

मुजरा नजराणा सब कम पड जावेला
नै नयो लगाम हीज कोई लगावेला

भील पार जा जद रगणा आधा सु ज्यादा
सकुसल ध्यान सु लौट नै आती ही

दिल डूब्यै विण जगमन्तसिंघ तजवार सु
वा रस्सी हीज कटवा दी ही

नै फेर एक तगडो हा हा कार उठी
राणा नै पण विण रो अवभाण वियो

घनघोर नीच करम सू उत्पन्न शरमिन्दगी
रो पण वणा नै अवज्ञाण वियो

मान लिदो राणा रगणा रो ऊ करतब
वा सकुसल खेम लौट नै आवणी ही

अबे आधो उदपुर विण रा वस घर पावै
वात मुण्डा सु तो याईज वखाणी ही

गोता खोर तैराक दल झील तलासी
पण वा नटणी कठैई नी मिल पाई ही

आगली सवेर वणी री लास तैरती नजर
अविचल निस्चल आई ही

पण अणी अपराध करम री सजा किने ई
पण नी दिलवाई गी ही

केवल थोथी लापरली बाता कोरी
सहानुभूति हीज वताई गी ही

अबे नटराज महेसर परसाद पट्टा री
दलील–लेवा बुलाया जावै
पण बईमाना री बकसीस लेवा ती तो
बी साफ साफ मना करा जावै

बकसीस तो कई अबे कोई नट उदैपुर रो
पाणी पण नी पी पावे ना
चल्या जावेला अणीज वगत फैर लौट नै
पाछा वी कदी नी आवैला

तद सु आज तक वी कुल रा कोई नट
उदैपुर कानि नी लौट ने आया है
फैर चाहे कोई कलाघर पेरिस लन्दन
सिकागो मास्को तो फेर भी व्है आया है

घणो करुर मजाक करायो राणा रा मुण्डा
वणा अभागा असहाय निरबल सू
विचाराँ रो सब कुछ लुट ग्यो अणी
कूट विकट विराला छल बल सू

मीरा, क्रिसणा, रगणा जसा अभिसाप वो
राजसिंघासन पण काल समुदर डूब गयो
या कै कणी परबण सवेदणा वाणी रो
रस भरपूर पी नै या रुदर खूब गयो

करुण कथा सुण ऊ आन्धा चमण रो
आरतनाद कैलासपुरी सु उदैपुर आयो
आपणी पिरया री निरमम हत्या सु विण रो
अन्तर मन जा विण भील पै छायो

जिण सु पीछालो पण दहल उठियो
जल थल नभ सब ग्राच्छन्न किया
राणा कुल रा ग्रमिट गौरव पण ग्रबे वो
कुछ तो भी हा ग्रवछिन्न किया

पीछोला री सतह पे रोस ग्रभिमान क्षौभ
वेदना री लहर उफण री ही
राणा रो हरदो व्यो घणो विदरावित
ग्रातम ग्रभिमान मे व्है घूटणा री ही

घटणा या घणी पुराणी नी पण यो व्यस्त
जमानो विने भूल गियो
पण नटा रा इतिहास मे यो हादसो
पकड जबरदस्त एक तूल गियो

नट भाट तिलक चान्द यो हादसौ कथ
वणीज वगत छन्दा मे सजोयो हो
सवेदणा केणी ग्राज पण कँई जावै
सवारथ रा ग्रा धा यो विण रो बीज बोयो हो

ग्रबे पण चमणा वा ग्रतरपत ग्रात्मा कदी कदी
ग्रमावस राते वणी भील मे चित्कार लगावै है
जा वरन्दावन प्रासाद ठहरावा वारा रा कारजा
कप कपा नै चली पण जावै है

उदैपुर राज ग्रतिथि साला वणा निरदोस
नटा रो घणो ग्रपमान वियो
राणा वस रा ग्रपरिमित वैभव पण सव रे मन
यो घणो घौर सन्ताप वियो

फेर राणा वस वरन्दावन महल तज पीछोला
तट महला मे ग्रावास कीदो
नै वटैज विण नटणी री यादगार मे
एक चबूतरो वणा ग्राबाद कीदो

हत रगणा री याईज यादगार ग्रवे नटणी
री चबूतरो कै व्हावै है
जो भरस्ट सत्ता धन भोग लिप्सा सुखस्यान
लालसा एक सास्वत केणी कै जावै है

निस्पृही निर्भय वा वगा दुरदान्त दस्यु
वरिन्दा री कुत्सित याद बदसार दैवाव्है है
सहरद काव्य कला मरमज्ञ रसिक पाठक
वा एक करुणा रीजधार जगावै है

(या कथा प्रसिद्ध बगला साहित्यकार विमल मित्र री रचए
स्त्री ' पर ग्राधारित है ।)

हिन्दवाणी सूराणी नारिया

जगती मे विण मीसाल ई
हिन्दवाणी सूराणी नारिया
जाणी सुणी नी आज तक इण री सी
जी,जा निसारिया

आभरण पपा वी पहणती ही करती ही
सगार भी
पण कमर वणा रे कसी रही तीखी
हरदम कटारिया

पन्ना करुणा या पन्ना सरोखी और
कठैई मीसाल है
गैरत पै जी मर मिटी गजब वणा री
गुमानिया

किरणा री याद ग्राई जावे मीना वजार
रे मायने
छदम ग्रकबर री छाती चढ वैठी कटार रे ही
दो धारिया

दुरगा या लक्षमी रो पण ग्रौर कठैई
जवाव है
दुस्मण सु भीडीगी दे दी ही
खुद री कुरवाणिया

ग्रवाणज री ई वाता घटी चित्तौड
ग्राद मे
जौहर री चिता कूद पडी सैंकडा
हजारा नारिया